पाठ ७ मैं और मेरा देश

पाठ का सारांश

यह पाठ एक व्यक्ति के विचारों के माध्यम से यह समझाता है कि व्यक्ति और देश अलग नहीं होते, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से जुड़े होते हैं। शुरुआत में लेखक सोचता है कि उसका जीवन उसके घर, पड़ोस और नगर तक ही सीमित है और वह अपने आप में पूर्ण है। लेकिन एक "मानसिक भूकंप" यानी लाला लाजपत राय के अनुभव ने उसकी सोच बदल दी।

लाला लाजपत राय के शब्दों से उसे एहसास होता है कि यदि देश गुलाम या अपमानित है, तो व्यक्ति चाहे कितना भी सुखी क्यों न हो, वह पूर्ण और सम्मानित नहीं हो सकता। इसके बाद लेखक समझता है कि हर नागरिक अपने देश के सम्मान और गौरव का हिस्सा होता है।

पाठ में विभिन्न उदाहरणों—जैसे स्वामी रामतीर्थ की घटना, जापानी युवक का व्यवहार, और महान नेताओं के छोटे-छोटे उपहारों का सम्मान—के माध्यम से यह बताया गया है कि किसी भी व्यक्ति का आचरण उसके देश की छवि बनाता है।

लेखक यह भी स्पष्ट करता है कि देश की उन्नति केवल बड़े वैज्ञानिकों या धनवानों पर निर्भर नहीं है, बल्कि हर नागरिक के छोटे-छोटे अच्छे कार्यों और जिम्मेदारियों से होती है। हमें अपने देश की शक्ति और सौंदर्य दोनों को बनाए रखना चाहिए—नकारात्मक बातें फैलाने और गंदगी या असभ्यता से बचकर।

अंत में पाठ यह संदेश देता है कि व्यक्ति और देश एक-दूसरे से जुड़े हैं। इसलिए हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने व्यवहार, सोच और कार्यों से देश के सम्मान और प्रगति में योगदान दे।

कहानी का संदेश:-

- व्यक्ति और देश एक-दूसरे से जुड़े हैं।
- हर नागरिक का आचरण देश की छवि बनाता है।
- हमें अपने कार्यों से देश का सम्मान और विकास बढ़ाना चाहिए।

शब्दार्थ:

- संचित — इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ
- मानस — मन, चित्त, मन से उत्पन्न, मानसरोवर, रामचरितमानस
- तेजस्वी — तेजवाला, प्रतापी, शक्तिशाली, प्रभावशाली
- ठसक — चाल-ढाल का बनावटीपन, जिससे रूप, धन आदि का गर्व सूचित होता हो; ऐंठ, शान, नखरा
- धनिक — धनवान, धनी, स्वामी
- रसद — अनाज, खाने का सामान, भत्ता, राशन
- दाद देना — न्यायोचित प्रशंसा करना, न्याय करना

- साक्षी — गवाही, गवाह का बयान
- लांछित — दोषयुक्त, कलंकित
- हँडिया — एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन
- सुतली — सन या पटसन के रेशों से बटकर बनाई हुई डोरी
- चौपाल — गाँव में बना खुला या छायादार स्थान जहाँ लोग बैठकर पंचायत, बातचीत या बैठक करते हैं।
- सघन — घना, गझिन, ठोस
- तरेड़ — दरार
- ज़ीना — सीढ़ी, सोपान

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई", इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'दरार' किस ओर संकेत करता है?

    (क) पूर्णता के भाव की तुष्टि

    (ख) पारस्परिक संबंध टूटने की स्थिति

    (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार

    (घ) सुख-सुविधाओं का अभाव

    उत्तर: (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार

    कारण: लेखक पहले स्वयं को पूर्ण और संतुष्ट मानता है, लेकिन लाला लाजपत राय के अनुभव से उसकी यह "पूर्णता" टूट जाती है। इसलिए 'दरार' उसके आत्म-संतोष और पूर्णता की भावना में आई टूट को दर्शाती है।

2. निबंध में कहा गया है कि "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है।" लेखक को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद की अनुभूति होती है?

    (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का

    (ख) बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्नों का

    (ग) बिना किसी संदर्भ के पूछे गए प्रश्नों का

    (घ) किसी की समझ का आकलन करने वाले प्रश्नों का

    उत्तर: (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का

    कारण: लेखक कहता है कि ऐसे प्रश्न चर्चा को आगे बढ़ाते हैं और विचारों को विस्तार देने का अवसर देते हैं, इसलिए उन्हें उत्तर देने में उसे आनंद मिलता है।

3. “अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए”, इस वाक्य में पराधीनता के दिनों को दीन कहा गया है क्योंकि पराधीन भारत में—

    (क) भोजन, आवास और वस्त्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था।

    (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।

    (ग) महत्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी।

    (घ) धार्मिक रीति-रिवाजों को मनाने पर रोक लगाई जाती थी।

    उत्तर: (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।

    कारण: पराधीनता में सबसे बड़ी कमी आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की होती है, न कि केवल भौतिक सुविधाओं की। इसलिए ‘दीन’ शब्द मानसिक और राष्ट्रीय अपमान को दर्शाता है।

4. निबंध के अनुसार मनुष्य साधन-संपन्न होते हुए भी गौरव का अनुभव नहीं कर सकते यदि—

    (क) उन्हें विदेश भ्रमण के अवसर न मिलें।

    (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।

    (ग) उनके नगर की शासन प्रणाली कमजोर हो।

    (घ) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता हो।

    उत्तर: (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।

    कारण: पाठ में स्पष्ट है कि यदि देश गुलाम है, तो व्यक्ति के सारे सुख-साधन भी उसे सच्चा गौरव नहीं दे सकते।

5. “पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है”, इस वाक्य में रेखांकित शब्द ‘गाँठ’ किन दो बातों को साथ बाँधती है?

    (क) देश और नागरिक

    (ख) देश और संविधान

    (ग) देश और विदेश

    (घ) व्यवसाय और आजीविका

    उत्तर: (क) देश और नागरिक

    कारण: लेखक यह स्थापित करता है कि नागरिक और देश अलग नहीं हैं, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं और एक-दूसरे के सम्मान को प्रभावित करते हैं।

6. प्रस्तुत निबंध में मुख्यतः कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?

    (क) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था

    (ख) पारिवारिक संबंधों का महत्व

    (ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध

    (घ) देश का महत्व और व्यक्ति की उपेक्षा

    उत्तर: (ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध

    कारण: पूरा निबंध इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति और देश एक-दूसरे से जुड़े हैं और हर नागरिक के कार्य देश के सम्मान और छवि को प्रभावित करते हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. स्वामी रामतीर्थ फल देने वाले युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध क्यों हो गए?

   उत्तर: स्वामी रामतीर्थ उस जापानी युवक के उत्तर और व्यवहार से मुग्ध हो गए क्योंकि उस युवक ने न केवल तुरंत उनकी आवश्यकता समझी, बल्कि अपने देश के सम्मान को भी सर्वोपरि रखा। उसने फल देने के बदले धन नहीं लिया, बल्कि यह कहा कि यदि आप उसका मूल्य देना चाहते हैं तो अपने देश में जाकर यह मत कहना कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। इससे स्पष्ट होता है कि वह अपने देश के गौरव और छवि के प्रति अत्यंत जागरूक था।

2. जापान के युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फलों के मूल्य के रूप में क्या माँगा? आपके मन में उस युवक के व्यक्तित्व की कौन-सी छवि उभरती है, यह भी लिखिए।

   उत्तर: जापान के युवक ने फलों के मूल्य के रूप में स्वामी जी से यह माँगा— “आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।”

   - व्यक्तित्व की छवि: इस घटना से युवक के व्यक्तित्व की निम्नलिखित छवि उभरती है:
   - देशभक्त: वह अपने देश की छवि को लेकर अत्यंत संवेदनशील था।
   - निस्वार्थ और उदार: उसने फल लाने के लिए मेहनत की, लेकिन बदले में कोई व्यक्तिगत लाभ या धन नहीं चाहा।
   - जागरूक नागरिक: वह जानता था कि एक विदेशी के मन में देश के प्रति बनी नकारात्मक धारणा पूरे राष्ट्र के सम्मान को ठेस पहुँचा सकती है।

3. “बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।” स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे क्या तर्क हो सकते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर: स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे लेखक ने यह तर्क दिया है कि नागरिक और देश का अस्तित्व एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़ा है।

   - तर्क:
     - नागरिक का व्यवहार देश की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है।
     - व्यक्ति और देश एक-दूसरे के पूरक हैं।
     - एक नागरिक का अच्छा या बुरा कार्य पूरे देश की पहचान बन जाता है।
   - उदाहरण:
     - सकारात्मक उदाहरण: जापानी युवक ने स्वामी जी को फल देकर देश का सिर ऊँचा किया।
     - नकारात्मक उदाहरण: वहीं पुस्तकालय से चित्र चुराने वाले विद्यार्थी के कारण उसके देश के सभी नागरिकों पर प्रतिबंध लग गया, जिससे स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति का कार्य पूरे देश पर असर डालता है।

मेरे अनुभव मेरे विचार

1. “देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है”, अपने आस-पास के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति का भाव यह है कि व्यक्ति और राष्ट्र एक-दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति का आचरण केवल उसकी निजी पहचान नहीं, बल्कि उसके देश की छवि भी बनाता है।

- उदाहरण (गौरव): जब कोई भारतीय खिलाड़ी ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतता है, तो केवल उस खिलाड़ी का नहीं, बल्कि पूरे भारत का गौरव बढ़ता है।
- उदाहरण (हीनता): यदि कोई पर्यटक विदेश जाकर सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाता है या नियमों का उल्लंघन करता है, तो लोग उस व्यक्ति के साथ-साथ उसके पूरे देश को 'अनुशासनहीन' मानने लगते हैं।

2. "मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था।"

(क) प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक आप अपने किन-किन कार्यों में किस-किसका क्या सहयोग लेते हैं और आप दूसरों को किस तरह का सहयोग देते हैं? अपने अनुभव लिखिए।

उत्तर: सुबह से रात तक हमें अनेक लोगों की सहायता मिलती है और हम भी दूसरों की मदद करते हैं, जैसे—

- सहयोग लेना: प्रातःकाल दूध वाले से दूध लेना, बस ड्राइवर द्वारा स्कूल पहुँचाया जाना, शिक्षकों से शिक्षा पाना और सफाई कर्मचारी द्वारा गली की सफाई किया जाना।
- सहयोग देना: छोटे भाई-बहनों को पढ़ाना, वृद्धों को सड़क पार कराना, और कक्षा में सहपाठियों के साथ नोट्स साझा करना।

(ख) उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'बहुतों' में कौन-कौन सम्मिलित होंगे, अनुमान के आधार पर लिखिए।

उत्तर: समें वे सभी लोग शामिल हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को सुगम बनाते हैं, जैसे— किसान, श्रमिक, डॉक्टर, सैनिक, दुकानदार, सफाईकर्मी और हमारे परिवार के सदस्य।

(ग) रचनाकार को स्वयं के लिए दूसरे लोगों से किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता पड़ती होगी और वह दूसरों को किस प्रकार का सहयोग देता होगा, अनुमान के आधार पर लिखिए।

उत्तर: रचनाकार का दृष्टिकोण:

- सहयोग की आवश्यकता: रचनाकार को अपने विचारों के प्रसार के लिए प्रकाशकों, पाठकों और समाज के विभिन्न वर्गों के अनुभवों की आवश्यकता पड़ती होगी।
- सहयोग देना: वह अपने लेखन के माध्यम से समाज को नई दिशा, प्रेरणा और नैतिक मूल्य प्रदान कर दूसरों का सहयोग करता होगा।

3. "सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता।"

(क) उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित अंश "युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता" के आधार पर लिखिए कि देश की प्रगति, विकास एवं सुरक्षा के प्रति हम सभी के क्या-क्या दायित्व हैं? अपने उत्तर को विस्तार देने के लिए अपने घर या पास-पड़ोस के बड़ों और अध्यापक से चर्चा करके लिखिए।

उत्तर: हम सभी का कर्तव्य है कि—

- देश के नियमों का पालन करें
- स्वच्छता बनाए रखें
- ईमानदारी से काम करें
- देशविरोधी कार्यों से बचें
- शिक्षा और विकास में योगदान दें

(ख) अपने पास-पड़ोस में विचरने वाले पशु-पक्षियों की जीवनचर्या का अवलोकन कीजिए और अपने अवलोकन के आधार पर लिखिए कि आप उनके संघर्षों को किस रूप में देखते हैं? (संकेत— आप अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी 'दो बैलों की कथा' के मुख्य पात्रों के अनुभवों को भी आधार बना सकते हैं।)

उत्तर: जैसे 'दो बैलों की कथा' में हीरा-मोती ने अपनी स्वतंत्रता और अस्तित्व के लिए संघर्ष किया, वैसे ही हमारे आस-पास के पक्षी भोजन और सुरक्षित ठिकाने के लिए निरंतर संघर्ष करते हैं। उनका संघर्ष जीवित रहने की उनकी इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

(ग) इस निबंध में जीवन को युद्ध क्यों कहा गया है? आप अपने घर के बड़ों से इस विषय पर चर्चा करके उनके और अपने विचार लिखिए।

उत्तर: जीवन चुनौतियों, कठिनाइयों और निरंतर परिवर्तनों का नाम है। इन परिस्थितियों से जूझकर सफलता प्राप्त करना एक युद्ध की रणनीति की तरह है, जहाँ धैर्य और साहस अनिवार्य हैं।

(घ) देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा सैनिक करते हैं। इसी तरह हमारे आस-पास हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए अनेक लोग कार्यरत हैं। ये कौन-कौन लोग हैं और उनके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

उत्तर: समाज में शिक्षक, डॉक्टर, किसान, पुलिस, सफाईकर्मी, ड्राइवर आदि हमारे जीवन को आसान बनाते हैं। हम उन्हें सम्मान देकर, नियमों का पालन करके, गंदगी न फैलाकर और सहयोग करके उनका समर्थन कर सकते हैं।

4. "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर लिखिए कि पास-पड़ोस के लोगों में किस तरह के पारस्परिक संबंध रहे होंगे?

उत्तर: पुराने समय में पड़ोसियों के बीच 'परिवार' जैसा संबंध होता था। लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में हाथ बँटाते थे और बच्चों पर पूरे पड़ोस का स्नेह और अनुशासन रहता था।

(ख) वर्तमान समय में ऐसे संबंधों में किस तरह के परिवर्तन आए हैं और इनके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।

उत्तर: अब लोग अपने घरों तक सीमित हो गए हैं (Privacy की चाह)। भागदौड़ भरी जिंदगी और मोबाइल/इंटरनेट की अधिकता ने आपसी मेल-जोल कम कर दिया है, जिससे सामाजिक जुड़ाव कम हो गया है।

5. "क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?" अपने घर/विद्यालय के आस-पास, सार्वजनिक संसाधनों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की स्वच्छता एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आप और आपके सहपाठी, संबंधी क्या-क्या करते हैं?

उत्तर: स्वच्छता और सौंदर्य बनाए रखने के लिए हम निम्नलिखित कार्य करते हैं:

- सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा न फेंकना और दूसरों को भी रोकना।
- ऐतिहासिक इमारतों की दीवारों पर नाम न लिखना या उन्हें गंदा न करना।
- विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण करना और उनकी देखभाल करना।

6. "मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे।" देश के सम्मान को धक्का न पहुँचे, इसके लिए क्या करें और क्या नहीं करें? अपने-अपने समूह में इसकी चर्चा कीजिए और चर्चा से उभरे बिंदुओं को प्रातःकालीन सभा में पढ़कर सुनाइए।

उत्तर: प्रातःकालीन सभा के लिए मुख्य बिंदु:

- क्या करें: राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें, मतदान की प्रक्रिया में ईमानदारी से भाग लें, सार्वजनिक संपत्ति को अपनी संपत्ति समझें और अतिथि का सम्मान करें।
- क्या न करें: विदेशी मेहमानों के साथ दुर्व्यवहार न करें, अफवाहें न फैलाएँ, रिश्वत न दें और न लें, और अपने देश की बुराई दूसरों के सामने न करें (शक्ति-बोध का ह्रास न होने दें)।

मेरे प्रश्न

“ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है”

निबंध के उपर्युक्त संदर्भ से आपके लिए दो प्रश्न बनाए गए हैं—

(क) रचनाकार को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद आता है?

(ख) आपको किस तरह के प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है?

अब इस निबंध के आलोक में नीचे दी गई सामग्री को पढ़कर तीन प्रश्न बनाइए और लिखिए।

यह सोचना एकदम निराधार है कि केवल संपन्न व्यक्ति ही देश की प्रगति और विकास में योगदान दे सकते हैं। देश की सुरक्षा का विषय हो अथवा ऐश्वर्य व संपन्नता का, सभी नागरिकों का अपनी ही तरह से योगदान होता है। हम सब नागरिक अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम यदि कुछ भी गलत करते हैं तो उससे अपनी छवि ही धूमिल नहीं होती अपितु अपने देश की छवि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उत्तर: 'मेरे प्रश्न' अनुभाग के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर और दी गई सामग्री पर आधारित नए प्रश्न नीचे दिए गए हैं:

(क) रचनाकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' को उन प्रश्नों का उत्तर देने में अपूर्व आनंद आता है जो 'बात को खिलने' और 'आगे बढ़ने' का अवसर देते हैं। उनके अनुसार, जो प्रश्न ठीक समय पर पूछे जाते हैं और विषय की गहराई में उतरने की प्रेरणा देते हैं, वे बौद्धिक संवाद को रोचक बना देते हैं।

(ख) मुझे ऐसे प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है जो तार्किक (Logical) हों और जिनमें रहस्य या जिज्ञासा छिपी हो। विशेष रूप से पहेलियाँ या ऐसे प्रश्न जो हमारी कल्पनाशीलता को चुनौती देते हैं और हमें लीक से हटकर सोचने पर मजबूर करते हैं, उन्हें हल करना अधिक आनंददायक होता है।

सामग्री के आलोक में बनाए गए तीन प्रश्न निम्नलिखित हैं:

1. यह सोचना क्यों गलत (निराधार) है कि केवल अमीर या संपन्न व्यक्ति ही देश के विकास में योगदान दे सकते हैं?
2. "हम सब नागरिक अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं"— इस कथन का क्या अर्थ है और यह हमारी जिम्मेदारी को कैसे बढ़ाता है?
3. हमारे किसी गलत कार्य का प्रभाव केवल हम पर न पड़कर हमारे देश पर कैसे पड़ता है?

विधा से संवाद

आपने अब तक अपनी पाठ्यपुस्तकों और अन्य पुस्तकों में बहुत से निबंध पढ़े होंगे और लिखे भी होंगे। निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं? आइए, इस विधा से संबंधित कुछ विचार-विमर्श करते हैं—

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

1. 'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है— 'बाँधना' (नि+बंध)। अर्थात भली-भाँति बँधा या गठा हुआ। यह गद्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय पर अपने अनुभव, विचार, दृष्टिकोण और भावनाओं को तार्किक, भावनात्मक, क्रमबद्ध और साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। एक विधा के रूप में निबंध की कुछ विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

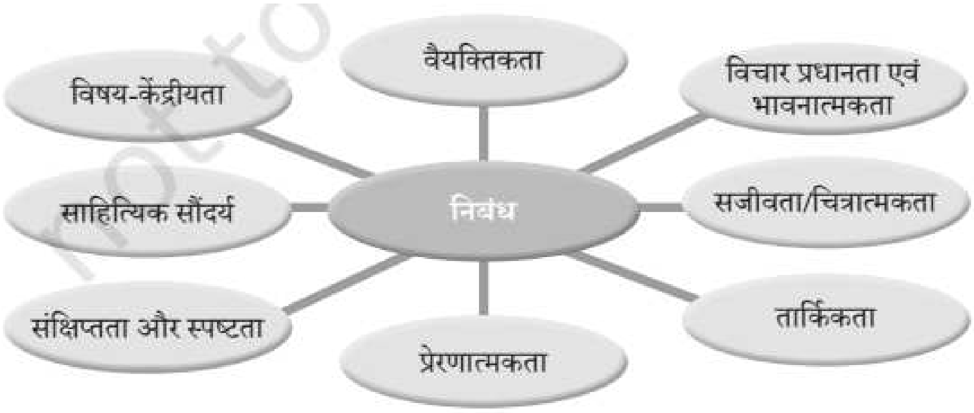

उपर्युक्त बिंदुओं से संबंधित संदर्भ 'मैं और मेरा देश' निबंध से खोजकर लिखिए।

उत्तर: निबंध की मुख्य विशेषताओं और उनके उदाहरण यहाँ दिए गए हैं:

- वैयक्तिकता: लेखक ने स्वयं के अनुभवों और भावनाओं को प्रधानता दी है, जैसे— "मैं अपने देश का नागरिक हूँ" और "मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही।"
- विषय-केंद्रीयता: पूरा निबंध नागरिक के कर्तव्य और देश के सम्मान के इर्द-गिर्द केंद्रित है।
- विचार प्रधानता एवं भावनात्मकता: लेखक ने तार्किक विचारों (जैसे नागरिक उत्तरदायित्व) को भावनात्मक उदाहरणों (जैसे जापानी युवक और स्वामी रामतीर्थ की घटना) के साथ पिरोया है।
- सजीवता/चित्रात्मकता: निबंध में घटनाओं का वर्णन इतना सजीव है कि पाठक के मन में चित्र बन जाते हैं, जैसे— "दीवार में दरार पड़ना" या "पुल पर दौड़कर फल लाना।"
- तार्किकता: लेखक ने तर्क दिया है कि देश की प्रगति केवल संपन्न व्यक्तियों से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के छोटे-छोटे आचरणों से होती है।
- प्रेरणात्मकता: यह निबंध पाठकों को अपने देश के गौरव के प्रति जागरूक रहने और शिष्ट आचरण करने की प्रेरणा देता है।
- संक्षिप्तता और स्पष्टता: अपनी बात को कम शब्दों में प्रभावी ढंग से कहना, जैसे— "ठीक मनुष्य को अपना मत दें।"
- साहित्यिक सौंदर्य: भाषा में शब्द-युग्मों (जैसे ममता-दुलार, भरा-पूरा) और मुहावरों का सटीक प्रयोग किया गया है।

2. "क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई? बड़े महत्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का..."

निबंध के उपर्युक्त अंश को ध्यान से देखिए। इसकी पहली पंक्ति में एक प्रश्न है और बाद के अंश में उसका उत्तर दिया गया है। आपने ध्यान दिया होगा कि यह पूरा निबंध इसी तरह की प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह प्रश्नोत्तर या

संवादात्मक शैली इस निबंध की संरचना को विशेष बनाती है। इसी तरह की और भी अन्य विशेषताएँ इस निबंध में से छाँटकर लिखिए।

उत्तर: प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली के अतिरिक्त इस निबंध में निम्नलिखित विशेषताएँ भी दिखाई देती हैं:

- उदाहरण शैली: अमूर्त विचारों को समझाने के लिए ठोस ऐतिहासिक और व्यावहारिक उदाहरणों (कमालपाशा, नेहरू जी, जापानी युवक) का प्रयोग किया गया है।
- संबोधन शैली: लेखक पाठक से सीधे संवाद करता प्रतीत होता है, जिससे पाठक निबंध से जुड़ाव महसूस करता है (जैसे— "क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं?")।
- सूक्तिपरक वाक्य: छोटे और अर्थपूर्ण वाक्यों का प्रयोग जो जीवन का बड़ा दर्शन समझा देते हैं (जैसे— "देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है")।

3. नीचे कुछ विषय दिए गए हैं, आप इनमें से किन विषयों पर निबंध लिखना चाहेंगे, कारण सहित लिखिए—

- मेरा भारत मेरा गौरव
- चाँद के साथ गपशप
- जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
- गागर में सागर
- यथा नाम तथा गुण
- दूध का दूध और पानी का पानी

उत्तर: मैं निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखना चाहूँगा/चाहूँगी:

- मेरा भारत मेरा गौरव

→ कारण: यह विषय देशभक्ति से जुड़ा है। इसमें भारत की संस्कृति, एकता और उपलब्धियों पर लिखकर अपने देश पर गर्व की भावना व्यक्त की जा सकती है।

- चाँद के साथ गपशप

→ कारण: यह एक कल्पनात्मक और रोचक विषय है। इसमें रचनात्मक सोच और कल्पना शक्ति का उपयोग करके चाँद से बातचीत जैसा निबंध लिखा जा सकता है।

- जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि

→ कारण: यह विषय कवि की कल्पना शक्ति और साहित्य की विशेषता को दर्शाता है। इसमें बताया जा सकता है कि कवि अपनी सोच से नई दुनिया रच सकता है।

- गागर में सागर

→ कारण: यह विषय संक्षेप में गहरी बात कहने की कला को दर्शाता है। इसमें कम शब्दों में बड़े अर्थ को समझाने का अभ्यास किया जा सकता है।

- यथा नाम तथा गुण

→ कारण: यह विषय नाम और गुणों के संबंध पर आधारित है। इसमें यह बताया जा सकता है कि कई बार व्यक्ति या वस्तु का नाम उसके गुणों से मेल खाता है।

- दूध का दूध और पानी का पानी

→ कारण: यह विषय न्याय और सच्चाई से जुड़ा है। इसमें सही और गलत को स्पष्ट रूप से पहचानने की बात कही जाती है।

विषयों से संवाद

चुनाव एवं आपके अनुभव

“क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें?”

रचनाकार के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर है— निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया।

1. जब कोई चुनाव प्रक्रिया आपके क्षेत्र में शुरू होती है तो किस तरह की गतिविधियाँ होती हैं?

   उत्तर: जब हमारे क्षेत्र में चुनाव प्रक्रिया शुरू होती है, तो निम्नलिखित गतिविधियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं:

   - प्रचार-प्रसार: विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग पोस्टर, बैनर और झंडों के माध्यम से अपना प्रचार करते हैं।
   - सभाएँ और रैलियाँ: उम्मीदवार अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए जनसभाएँ और रैलियाँ आयोजित करते हैं।
   - घर-घर जाकर जनसंपर्क: उम्मीदवार और उनके समर्थक घर-घर जाकर वोट माँगते हैं और अपनी योजनाएँ बताते हैं।
   - जागरूकता अभियान: चुनाव आयोग द्वारा लोगों को निष्पक्ष मतदान के लिए प्रेरित करने हेतु 'मतदाता जागरूकता अभियान' चलाए जाते हैं।

2. “जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें”, आपके विचार से एक अच्छे उम्मीदवार में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

   उत्तर: मेरे विचार से "ठीक मनुष्य" या एक अच्छे उम्मीदवार में निम्नलिखित गुण होने अनिवार्य हैं:

   - ईमानदारी और सत्यनिष्ठा: वह अपने वादों के प्रति सच्चा हो और भ्रष्टाचार से मुक्त हो।
   - सेवा भाव: उसका मुख्य लक्ष्य जनता की सेवा और क्षेत्र का विकास होना चाहिए।
   - शिक्षित और दूरदर्शी: वह समस्याओं को समझने और उनका समाधान खोजने की बौद्धिक क्षमता रखता हो।
   - भेदभाव रहित आचरण: वह जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर भेदभाव न करके सभी के हित की बात करे।

3. चुनाव से जुड़ा अपना कोई अनुभव लिखिए। (संकेत— विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव)

   उत्तर: मेरे विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि के चुनाव का आयोजन किया गया। इस चुनाव में कक्षा के कुछ विद्यार्थियों ने अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत की। प्रत्येक उम्मीदवार ने कक्षा के सामने अपने विचार रखे और बताया कि यदि वे चुने गए तो वे कक्षा की समस्याओं का समाधान कैसे करेंगे। इसके बाद सभी विद्यार्थियों ने निष्पक्ष रूप से मतदान किया। मतगणना के बाद जिस विद्यार्थी को सबसे अधिक मत मिले, उसे कक्षा प्रतिनिधि चुना गया। इस अनुभव से हमें लोकतांत्रिक प्रक्रिया, मतदान का महत्व और सही चुनाव करने की सीख मिली।

4. यदि आप किसी सभा, क्लब आदि के चुनाव में उम्मीदवार हों तो आपके क्या-क्या मुद्दे होंगे?

   उत्तर: यदि मैं उम्मीदवार होता/होती तो मेरे मुद्दे होंगे—

   - सभी विद्यार्थियों की समस्याओं को सुनना और समाधान करना
   - कक्षा/सभा में स्वच्छता बनाए रखना

- अनुशासन और सहयोग को बढ़ावा देना
- पढ़ाई और खेल दोनों को समान महत्व देना
- सभी को समान अवसर देना
- ईमानदारी और पारदर्शिता से कार्य करना

अधिकार और कर्तव्य

इस निबंध में किसी भी स्वतंत्र देश में नागरिक के अधिकार और उसके कर्तव्य की बात की गई है। आपकी पाठ्यपुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठ पर भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार और कर्तव्य दिए गए हैं। उसे पढ़कर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर: अधिकार और कर्तव्य पर चर्चा —

- भारतीय संविधान में नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार दिए गए हैं, जैसे—
  - समानता का अधिकार
  - स्वतंत्रता का अधिकार
  - शिक्षा का अधिकार
  - शोषण के विरुद्ध अधिकार
  - धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
- इसी प्रकार नागरिकों के कुछ मौलिक कर्तव्य भी हैं, जैसे—
  - संविधान का पालन करना
  - राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना
  - देश की एकता और अखंडता बनाए रखना
  - स्वच्छता और पर्यावरण की रक्षा करना
  - देश की संपत्ति का संरक्षण करना

निष्कर्ष: अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अधिकार हमें स्वतंत्रता देते हैं, जबकि कर्तव्य हमें जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। एक अच्छे देश के लिए दोनों का पालन करना आवश्यक है।

सृजन

हमारा पुस्तकालय

आप अपने विद्यालय एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में जाते हैं। हो सकता है, आपको कभी कोई पुस्तक फटी हुई मिली हो या उसमें से कुछ पृष्ठ गायब हों अथवा उसमें पेन से निशान लगे हों—

- ऐसा होने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर: पुस्तकों के फटने, पन्ने गायब होने या उन पर निशान लगने के पीछे कारण हो सकते हैं—

- कुछ छात्रों द्वारा पुस्तकों का अनुचित उपयोग करना
- पन्ने मोड़ना या फाड़ना
- पुस्तक में पेन या पेंसिल से लिखना
- लापरवाही से पुस्तकों को रखना
- पुस्तकों को समय पर न लौटाना या सही तरीके से संभालकर न रखना

- ऐसा न हो, इसके लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर: पुस्तकों की स्थिति बेहतर बनी रहे, इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- नियमित निरीक्षण: पुस्तकालय से पुस्तक जारी (Issue) करते समय और वापस लेते समय उसकी स्थिति की जाँच अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए।
- अर्थदंड की व्यवस्था: पुस्तक को जानबूझकर नुकसान पहुँचाने वालों पर उचित जुर्माना लगाया जाना चाहिए ताकि वे भविष्य में सतर्क रहें।
- जागरूकता अभियान: विद्यार्थियों को सार्वजनिक संपत्ति के प्रति उनके कर्तव्यों के बारे में शिक्षित करना।
- डिजिटलीकरण: बहुत पुरानी या दुर्लभ पुस्तकों के डिजिटल संस्करण उपलब्ध कराना ताकि मूल प्रतियों का उपयोग कम हो।

- आप पुस्तकालय में किन नियमों का पालन करते हैं, उन नियमों का पालन करना क्यों अनिवार्य है? इस पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

उत्तर: पुस्तकालय में हम निम्न नियमों का पालन करते हैं—

- शांत रहना और शोर न करना
- पुस्तकों को सही स्थान पर रखना
- पुस्तकें समय पर लौटाना
- पुस्तकों को साफ-सुथरा रखना
- पुस्तकालय में अनुशासन बनाए रखना

इन नियमों का पालन करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि इससे सभी विद्यार्थी पुस्तकों का सही उपयोग कर पाते हैं, पुस्तकें सुरक्षित रहती हैं और ज्ञान प्राप्त करने का वातावरण शांत और व्यवस्थित बना रहता है।

ब्रेल लिपि में पुस्तकें

आपके विद्यालय में रोचक पुस्तकों का भंडार है परंतु आपके 'दृष्टिबाधित' सहपाठी स्वयं पढ़कर इनका आनंद नहीं उठा पाते हैं। प्रधानाध्यापक को ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने के संदर्भ में पत्र लिखिए।

उत्तर:

प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

_______ विद्यालय, _______

विषय: ब्रेल लिपि में पुस्तकें उपलब्ध कराने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय/महोदया,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में अनेक रोचक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनसे हम सभी छात्र लाभान्वित होते हैं। परंतु हमारे विद्यालय में कुछ दृष्टिबाधित सहपाठी भी अध्ययनरत हैं, जो इन पुस्तकों का लाभ स्वयं पढ़कर नहीं उठा पाते हैं।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि विद्यालय में ब्रेल लिपि में पुस्तकें उपलब्ध कराने की कृपा करें, ताकि हमारे दृष्टिबाधित सहपाठी भी समान रूप से अध्ययन कर सकें और ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह कदम समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देगा।

हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका आज्ञाकारी छात्र/छात्रा

नाम: _________

कक्षा: _________

दिनांक: _________

कृतज्ञता ज्ञापन

"अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए..."

देश के विकास में सभी का सहयोग होता है जो सीमा पर तैनात हैं और जो देश के भीतर हैं, जैसे— अध्यापक, किसान, श्रमिक, कलाकार, वैज्ञानिक, अभियंता आदि। इन सभी के अमूल्य योगदान के लिए कृतज्ञता ज्ञापन तैयार करके लिखिए।

उत्तर: आज हम उन सभी महान व्यक्तियों और कर्मयोगियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनके परिश्रम और त्याग से हमारा देश निरंतर आगे बढ़ रहा है। देश का विकास सभी के संयुक्त प्रयास से संभव होता है, चाहे वे सीमा पर हों या देश के भीतर।

- सैनिकों के प्रति कृतज्ञता: हम उन वीर सैनिकों को नमन करते हैं, जो कठिन परिस्थितियों में हमारी सीमाओं की रक्षा करते हैं। उनकी सतर्कता ही हमारी सुरक्षा और स्वतंत्रता का आधार है।
- किसानों के प्रति आभार: हम अपने अन्नदाताओं के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हैं, जो दिन-रात मेहनत करके पूरे देश का पेट भरते हैं।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

- श्रमिकों और अभियंताओं के प्रति सम्मान: हम उन श्रमिकों और अभियंताओं के आभारी हैं, जो अपने परिश्रम से देश के विकास के लिए भवन, सड़कें और पुल बनाते हैं।
- अध्यापकों के प्रति सम्मान: हम शिक्षकों को नमन करते हैं, जो नई पीढ़ी को शिक्षित कर देश का भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं।
- वैज्ञानिकों और चिकित्सकों के प्रति कृतज्ञता: हम उन वैज्ञानिकों और डॉक्टरों का धन्यवाद करते हैं, जो अपनी खोजों और सेवाओं से देश को प्रगति और स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।
- कलाकारों के प्रति धन्यवाद: हम कलाकारों का आभार मानते हैं, जो अपनी कला से देश की संस्कृति और परंपरा को जीवित रखते हैं।

निष्कर्ष: देश केवल एक भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि सभी नागरिकों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे और देश के गौरव को बनाए रखेंगे।

विज्ञापन

"ठीक मनुष्य को अपना मत दें।"

उपर्युक्त पंक्ति में चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने का संदेश दिया गया है। आप भी चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर: चुनाव में एक योग्य और ईमानदार प्रतिनिधि चुनने के लिए एक प्रेरक विज्ञापन यहाँ प्रस्तुत है:

॥ लोकतंत्र का महापर्व: आपका मत, आपकी शक्ति ॥

"सही चुनाव, बेहतर कल"

क्या आप अपने क्षेत्र का कायाकल्प चाहते हैं?

क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चों का भविष्य सुरक्षित हो?

चुनाव केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि देश के भाग्य निर्माण का अवसर है। एक 'ठीक मनुष्य' को अपना मत देकर आप न केवल अपना कर्तव्य निभाते हैं, बल्कि राष्ट्र के गौरव को भी बढ़ाते हैं।

एक योग्य उम्मीदवार की पहचान कैसे करें?

अपना कीमती वोट देने से पहले स्वयं से ये प्रश्न पूछें:

- ईमानदारी: क्या उम्मीदवार का चरित्र बेदाग और पारदर्शी है?
- सेवा भाव: क्या वह संकट के समय आपके साथ खड़ा रहा है?
- दृष्टिकोण: क्या उसके पास क्षेत्र के विकास के लिए कोई ठोस योजना है?
- योग्यता: क्या वह आपकी समस्याओं को सही मंच पर उठाने में सक्षम है?

हमारी अपील:

"लालच और झूठे वादों को नकारें,

केवल योग्यता और सत्यनिष्ठा को स्वीकारें।"

याद रखें: आपका एक गलत चुनाव पूरे देश की छवि को प्रभावित कर सकता है, जबकि एक सही चुनाव देश को उन्नति के शिखर पर ले जा सकता है।

अपना मत सोच-समझकर दें।

स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण में भागीदार बनें।

स्वच्छता और आचरण

"क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं..."

निबंध के इस अंश को पुनः पढ़िए। इस प्रकार के और कौन-कौन से आचरण हो सकते हैं जिनसे देश के सौंदर्य को आघात लगता है? इस विषय पर अपने अभिभावकों, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए। (संकेत— ऐतिहासिक या सार्वजनिक स्थानों पर अपना नाम आदि लिखना।)

उत्तर: कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के अनुसार हमारे छोटे-छोटे व्यवहार ही देश की छवि और सौंदर्य को प्रभावित करते हैं। केला खाकर छिलका फेंकने के अलावा भी कई ऐसे आचरण हैं जो देश की सुंदरता को नुकसान पहुँचाते हैं।

- देश के सौंदर्य को आघात पहुँचाने वाले आचरण:
    - सार्वजनिक स्थानों पर थूकना और गंदगी फैलाना
    - ऐतिहासिक स्मारकों की दीवारों पर नाम लिखना या उन्हें नुकसान पहुँचाना
    - कूड़ेदान होने के बावजूद इधर-उधर कचरा फेंकना
    - सार्वजनिक स्थानों पर अशिष्ट भाषा या व्यवहार करना
    - राष्ट्रीय संपत्ति जैसे बस, ट्रेन, पार्क आदि को नुकसान पहुँचाना
    - पानी और बिजली जैसी संसाधनों की बर्बादी करना
    - ट्रैफिक नियमों का पालन न करना और कतार में न लगना
- चर्चा के बिंदु:
    - हम घर की तरह बाहर सफाई क्यों नहीं रखते?
    - यदि कोई सार्वजनिक स्थान को गंदा कर रहा हो, तो उसे विनम्रता से कैसे रोकें?
    - क्या स्वच्छता और अनुशासन भी देशभक्ति का हिस्सा हैं?

निष्कर्ष: हमारे अच्छे आचरण से ही देश सुंदर और सम्मानित बनता है। यदि हर नागरिक अपने व्यवहार में सुधार लाए, तो देश की छवि और प्रतिष्ठा स्वतः बढ़ जाएगी।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

संदर्भ में शब्द

नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

- एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई।
- क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई।

दीवार में पैदा हुई चटक/तरेड़/फाँक/टूटन के लिए 'दरार' शब्द का प्रयोग करते हैं। भूकंप आने पर अथवा किसी भी प्रकार के तोड़-फोड़ का कार्य होने पर भवनों की छतों और दीवारों में दरार पड़ जाती है। इस शब्द का प्रयोग ऐसे भी किया जाता है—

- वे बहुत अच्छे मित्र थे। न जाने ऐसा क्या हुआ कि उनके संबंधों में दरार पड़ गई।
- भेदभाव की भावना सामाजिक एकता में दरार डालती है।

अब इसी प्रकार 'गाँठ' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

- "पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है"
- माला गूँथते समय धागे के एक सिरे पर गाँठ बाँध दीजिए।

इसी प्रकार 'पानी' शब्द का प्रयोग देखिए—

- बहुत प्यास लगी है, पानी दीजिए।
- जब उस लड़के की पुस्तक से पन्ने फाड़ने की बात सामने आई तो वह पानी-पानी हो गया।
- इतनी अधिक वर्षा हुई कि चारों ओर पानी-पानी हो गया।
- अब इनके कामों के बारे में और क्या कहा जाए, इनका तो पानी ही उतर चुका है।

अब अपनी पाठ्यपुस्तक में से ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए जो संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हों।

उत्तर: पाठ्यपुस्तक के संदर्भ और हिंदी व्याकरण के आधार पर यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए गए हैं, जो वाक्य के प्रयोग (संदर्भ) के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं:

1. कर

→ हाथ: "हमें अपने कर-कमलों से इस नेक कार्य की शुरुआत करनी चाहिए।"

→ टैक्स: "प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह समय पर अपना सरकारी कर चुकाए।"

2. हार

→ माला: "जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ का स्वागत फूलों के हार से किया।"

→ पराजय: "जीवन एक युद्ध है, जहाँ हमें अपनी हार से निराश नहीं होना चाहिए।"

3. उत्तर

→ जवाब: "स्वामी जी जापानी युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए।"

→ एक दिशा: "हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है।"

4. फल

→ खाने वाला फल: "जापानी युवक ने टोकरी में ताजे फल लाकर स्वामी जी को भेंट किए।"

→ परिणाम/नतीजा: "व्यक्ति के अच्छे कर्मों का फल उसके देश को भी गौरव प्रदान करता है।"

5. सोना

→ स्वर्ण (धातु): "प्राचीन समय में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था।"

→ नींद/शयन क्रिया: "थकावट के कारण वह जल्दी सोने चला गया।"

6. आम

→ एक फल: "आम को फलों का राजा माना जाता है।"

→ साधारण/सामान्य: "देश की प्रगति केवल विशेष लोगों से नहीं, बल्कि आम नागरिकों के सहयोग से होती है।"

मिलते-जुलते भाव वाले 'शब्द-युग्म'

- "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"
- "इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।"

हले वाक्य में 'ममता-दुलार' और दूसरे वाक्य में 'भरा-पूरा' शब्द मिलता-जुलता भाव दे रहे हैं। ये शब्द-युग्म हैं। शब्द-युग्म प्रायः दो शब्दों के समूह होते हैं। ये कई प्रकार से बनते और बनाए जाते हैं। कभी अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, कभी उच्चारण की दृष्टि से समान होते हैं परंतु अर्थ में अंतर होता है, कभी विपरीत भाव भी देते हैं। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आती है।

आप इस निबंध में से मिलते-जुलते अर्थ वाले और पुनरुक्त (एक ही शब्द को फिर से कहना) शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

उत्तर: कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' द्वारा रचित निबंध 'मैं और मेरा देश' में भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शब्द-युग्मों का प्रयोग किया गया है। निबंध में से छाँटे गए मिलते-जुलते अर्थ वाले और पुनरुक्त शब्द-युग्म निम्नलिखित हैं:

1. मिलते-जुलते (समानार्थी) अर्थ वाले शब्द-युग्म:
   - ममता-दुलार : पड़ोसियों के स्नेह और प्रेम को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है।
   - भरा-पूरा : संपन्नता और पूर्णता के भाव को व्यक्त करने के लिए।
   - पोषण-रक्षण : पालन-पोषण और सुरक्षा के संदर्भ में।
   - तन-मन-धन : पूर्ण समर्पण की भावना को प्रकट करने के लिए।
   - देख-रेख : किसी वस्तु या व्यक्ति की देखभाल करने के अर्थ में।
   - प्रतिष्ठा-मान : सम्मान और गौरव के भाव को स्पष्ट करने के लिए।
   - हंसी-मजाक : विनोदपूर्ण व्यवहार के लिए।
   - चाल-ढाल : व्यवहार और जीने के ढंग के लिए।
2. पुनरुक्त शब्द-युग्म:
   - छोटे-छोटे : छोटे कार्यों या आचरणों के महत्व को दर्शाने के लिए।
   - कभी-कभी : समय की अनिश्चितता या अंतराल को बताने के लिए।
   - नई-नई : नवीनता पर बल देने के लिए (जैसे नई-नई योजनाएँ)।

- गली-गली : प्रत्येक स्थान या कोने के अर्थ में।
- घर-घर : प्रत्येक परिवार या निवास स्थान तक पहुँच के लिए।
- जल्दी-जल्दी : कार्य की तीव्रता या शीघ्रता बताने के लिए।
- साथ-साथ : संगति या एक साथ होने के भाव के लिए।

शब्दों की कड़ियाँ/श्रृंखला

"मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई <u>अपूर्णता</u> नहीं रही।"

उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित शब्द '<u>अपूर्णता</u>' में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का ही प्रयोग चिह्नित किया गया है। इस प्रयोग को समझकर नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय शब्द पहचानकर लिखिए—

अलौकिक, निरक्षरता, सम्मानित, अनावश्यक, अपमानित, अभिमानी

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अपूर्णता	अ	पूर्ण	ता

(आपकी पाठ्यपुस्तक के 'क्या लिखूँ?' पाठ में भी उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग के विषय में जानकारी दी गई है।)

उत्तर:

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
• अलौकिक	अ	लौकिक	—
• निरस्त्र	नि	अस्त्र	—
• सम्मानित	सम्	मान	इत
• अनावश्यक	अन	आवश्यक	—
• अपमानित	अप	मान	इत
• अभिमानी	अभि	मान	ई

गतिविधियाँ

'देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है।'

इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए और परिचर्चा में उभरकर आए बिंदुओं की रिपोर्ट तैयार कीजिए। रिपोर्ट को पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण या चार्ट के माध्यम से कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: परिचर्चा रिपोर्ट:

"देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है"

कक्षा में इस विषय पर हुई परिचर्चा में अनेक महत्वपूर्ण विचार सामने आए। छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर यह समझने का प्रयास किया कि देश केवल जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक है।

उभरकर आए मुख्य बिंदु:

- देश केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें रहने वाले लोग उसकी असली पहचान हैं।
- देश की संस्कृति, परंपराएँ, भाषा और मूल्य उसे विशेष बनाते हैं।
- नागरिकों का व्यवहार, आचरण और कार्य देश की छवि को बनाते या बिगाड़ते हैं।
- देश का सम्मान उसके नागरिकों के सम्मान और कार्यों से जुड़ा होता है।
- सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं, जबकि नागरिक देश के अंदर उसकी प्रगति में योगदान देते हैं।
- एकता, भाईचारा और सहयोग देश को मजबूत बनाते हैं।
- देशभक्ति केवल भावनाएँ नहीं, बल्कि व्यवहार में दिखाई देने वाली जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष: परिचर्चा से यह स्पष्ट हुआ कि देश केवल जमीन नहीं, बल्कि उसके नागरिकों, उनकी संस्कृति और उनके कार्यों का समुच्चय है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने आचरण से देश का सम्मान बढ़ाए।

भाषा संगम

"मैं अपने देश का नागरिक हूँ"

नीचे 'देश' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

देश (हिंदी); देशः, क्षेत्रम् (संस्कृत); देस, देश (पंजाबी); ख़ित्ता, इलाक़ा (उर्दू); दीश, मुलुँख (कश्मीरी); देशु, देसु (सिंधी); देश (मराठी); देश, प्रदेश (गुजराती); देश (कोंकणी); देश, मुलुक, राष्ट्र (नेपाली); प्रदेश, अञ्चल, राज्य (बांग्ला); देश, राज्य, प्रदेश (असमिया); लैबाक, मफम, लम (मणिपुरी); देश, राज्य, प्रदेश, अंचल (ओड़िआ); प्रदेशमु (तेलुगु); इडम्, पिरदेशम् (तमिल); देशम् (मलयालम); देश (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'देश' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

उत्तर: ''देश' शब्द की विविधता हमारी भाषाई समृद्धि और राष्ट्रीय एकता को दर्शाती है। विभिन्न भाषाओं में इसके अलग-अलग रूप होने के बावजूद इसका अर्थ एक ही है, जो हमारी सांस्कृतिक एकता को मजबूत बनाता है:

1. अन्य भाषाओं में 'देश' शब्द :
    - मैथिली: देश, मुलुक
    - भोजपुरी: देस, मुलुक
    - संताली: दिशम (Dishom)
    - अंग्रेज़ी: Country, Nation
    - अरबी: वतन (Watan), बिलाद (Bilad)
    - फ़ारसी: मुल्क (Mulk), सरज़मीन (Sar-zamin)
    - जापानी: कुनी (Kuni - 国)

2. अपनी मातृभाषा में वाक्य लेखन :
    - हिंदी (मानक): "मैं अपने देश का नागरिक हूँ।"
    - ब्रजभाषा: "मैं अपने देस कौ नागरिक हूँ।"
    - भोजपुरी: "हम अपने देस के नागरिक हईं।"
    - मैथिली: "हम अपन देशक नागरिक छी।"

झरोखे से

इस निबंध में स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय का उल्लेख किया गया है। इसमें नागरिक के कर्तव्य एवं अधिकारों की बात की गई है। अब आप लाला लाजपत राय के नीचे दिए गए कुछ विचारों को पढ़िए।

आत्मनिर्भरता

प्रगति का तात्पर्य है स्वतंत्रता की ओर प्रस्थान। तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हें यही सिखाया है कि जैसे ही तुममें पर-निर्भरता पनपती है, स्वतंत्रता पलायन कर जाती है। यदि पर-निर्भरता को पूर्णरूपेण नहीं त्याग सकते तो एक सीमा तक कम तो कर ही सकते हो। आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की आदत डालो, किसी को नाराज करने या परेशान करने के इरादे से नहीं, वरन पुरुषार्थ की भावना से ऐसा करो।

— यूरोप से भारत वापसी पर स्वागत के अवसर पर

(बंबई, 20 फरवरी 1920)

अधिकारों की रक्षा

हर एक का नैतिक कर्तव्य है कि तन-मन-धन से अपने जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा करे। मेरी राय में जो ऐसा नहीं करता, अपने नैतिक कर्तव्य से हट जाता है। जितनी जल्दी हम अपनी इस नैतिक जिम्मेदारी को समझ लेंगे, हम स्वराज को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

— जेल जाते समय देशवासियों के नाम संदेश

(7 जनवरी 1922)

उत्तर: लाला लाजपत राय के इन विचारों से हमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और अधिकारों की रक्षा का महत्वपूर्ण संदेश मिलता है।

- आत्मनिर्भरता का संदेश : लाला लाजपत राय कहते हैं कि सच्ची प्रगति स्वतंत्रता की ओर बढ़ना है। हमें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने बल पर कार्य करना चाहिए। आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास से व्यक्ति और देश दोनों मजबूत बनते हैं। यदि हम पूरी तरह पर-निर्भर रहेंगे तो स्वतंत्रता कमजोर हो जाएगी। इसलिए हमें अपने कार्य स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए।
- अधिकारों की रक्षा का संदेश : उनका कहना है कि हर नागरिक का नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने अधिकारों की रक्षा करे। यदि कोई व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं करता, तो वह अपने कर्तव्य से पीछे हटता है। अधिकारों की रक्षा करके ही हम सच्चे अर्थों में स्वराज और स्वतंत्रता को मजबूत बना सकते हैं।

निष्कर्ष: इन विचारों से स्पष्ट होता है कि आत्मनिर्भरता और अधिकारों की रक्षा दोनों ही एक मजबूत और स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

खोजबीन

निबंध में स्वामी रामतीर्थ के अनुभव का उल्लेख किया गया है। आप अपने पुस्तकालय या इंटरनेट से उनके विषय में सामग्री खोजकर पढ़िए और सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर: स्वामी रामतीर्थ के जीवन और विचारों पर चर्चा के लिए निम्न मुख्य बिंदु सहायक हैं—

स्वामी रामतीर्थ: परिचय

- स्वामी रामतीर्थ (1873–1906) आधुनिक भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक, गणितज्ञ और वेदांत के विद्वान थे। संन्यास लेने से पहले वे लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में गणित के प्राध्यापक थे।

मुख्य विचार और अनुभव

- जापान की घटना और राष्ट्रप्रेम: निबंध 'मैं और मेरा देश' में वर्णित जापान की घटना उनके जीवन का महत्वपूर्ण प्रसंग है। एक जापानी युवक ने उन्हें फल दिए और बदले में धन लेने के बजाय यह कहा कि वे अपने देश में जाकर जापान के फलों के बारे में गलत धारणा न फैलाएँ। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक सच्चा नागरिक अपने देश की प्रतिष्ठा के प्रति सजग रहता है।
- व्यावहारिक वेदांत: स्वामी जी के अनुसार केवल ध्यान करना ही धर्म नहीं है, बल्कि अपने दैनिक कार्यों को ईमानदारी और लगन से करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हर व्यक्ति अपने कार्य को निष्ठा से करके महान बन सकता है।
- विश्व-बंधुत्व की भावना: उन्होंने भारत के साथ-साथ विदेशों में भी भारतीय दर्शन का प्रचार किया। उनका मानना था कि पूरी दुनिया एक परिवार है और हमें सभी के साथ प्रेम और भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए।
- गणित और आध्यात्म का संबंध: स्वामी रामतीर्थ ने गणित और आध्यात्म को जोड़ा। उनका विश्वास था कि एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है, चाहे वह विज्ञान हो या आध्यात्म।

इन बिंदुओं के आधार पर सहपाठियों के साथ चर्चा करने से उनके जीवन और विचारों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।